

# डॉ. एंथोनी जे. टोमासिनो, यीशु से पहले यहूदी धर्म, सत्र 12, रोम का आगमन

© 2024 टोनी टोमासिनो और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. एंथोनी टोमासिनो और यीशु से पहले यहूदी धर्म पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 12 है, रोम का आगमन।

तो, हम यहूदियों के इतिहास में एक और महत्वपूर्ण मोड़ पर हैं।

हम रोमनों के समय में आ रहे हैं। इसलिए, जब हमने आखिरी बार अपने नायकों को छोड़ा था, या हम इस मामले में अपने विरोधी नायकों को कह सकते हैं, हम यहूदिया में वर्चस्व के लिए संघर्ष के बीच में थे। सलोमी, जो अपनी मृत्युशैया पर थी, उन्होंने अपने पुत्र हेराक्लियस द्वितीय को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था।

वह उसका बड़ा बेटा था। वह उच्च पुजारी के रूप में सेवा कर रहा था। लेकिन ऐसा लगता था कि उसका छोटा बेटा, जिसका नाम अरिस्टोबुलस द्वितीय था, उसके अपने विचार थे।

और इसलिए, उसने यरूशलेम पर आक्रमण किया, मंदिर की घेराबंदी की, और अंततः हेराक्लियस के साथ एक समझौता किया। अब, हेराक्लियस एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति नहीं था। वह वास्तव में नहीं था।

वह बहुत ज़्यादा शांत स्वभाव का था। अरिस्टोबुलस ज़्यादा आक्रामक व्यक्ति था। लेकिन जब हेराक्लियस के सामने एक सौदा पेश किया गया, एक प्रस्ताव जिसके तहत उसे रिटायर होने और एक अच्छी सी पेंशन पाने की अनुमति दी गई, जिससे वह अपने जीवन के बाकी समय तक गुज़ारा कर सके, तो उसने सोचा कि यह एक ऐसा सौदा है जिसे वह मना नहीं कर सकता।

और इसलिए उसने सिंहासन और उच्च पुरोहिती का त्याग कर दिया। यह एक पैकेज डील के साथ आता है। और वह इदुमिया की भूमि पर सेवानिवृत्त हो गया।

इदुमिया क्यों? खैर, उसे यहूदिया से बाहर निकालने के लिए, एक बात के लिए, जहाँ वह अरिस्टोबुलस के खिलाफ किसी भी तरह के प्रतिरोध के लिए बिजली की छड़ नहीं बनने वाला था। और उसने सोचा कि वह इदुमिया में एक अच्छा, शांत सा जीवन जी सकता है। अब, यह एक अच्छा, शांत सा जीवन होता अगर एंटिपेटर नाम के एक व्यक्ति की उपस्थिति न होती, जो उस समय इदुमिया का गवर्नर था।

वह एक मूल निवासी था। वह एक इदुमी था। तो, इसका मतलब है कि वह उन लोगों की पंक्ति में से था जिन्हें जॉन हरक्लियस के दिनों में धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर किया गया था, शायद वह व्यक्तिगत रूप से नहीं, लेकिन बहुत संभव है कि उसके पिता, आप जानते हैं।

तो, वह यहूदी धर्म में धर्मांतरित था। उसे यहूदी धर्म में धर्मांतरित होने के कारण अच्छी तरह से नहीं माना जाता था, लेकिन वह एक बहुत अमीर आदमी था, और वह काफी शक्तिशाली व्यक्ति था। वह एक बहुत ही चालाक आदमी भी था।

उसने हेराक्लियस द्वितीय के आगमन को इस व्यक्ति को अपने संरक्षण में लेकर खुद को समृद्ध करने के अवसर के रूप में देखा। सबसे पहले उसे उसे यह समझाना होगा कि उसकी जान खतरे में है। तुम जानते हो, गंभीरता से, मेरा मतलब है, क्या तुम सच में सोचते हो कि अरिस्टोबुलस तुम्हें जीने देगा? तुम उसके लिए खतरा हो, यार।

तुम्हें पता है, तुम उसकी शक्ति को कमजोर कर सकते हो। तुम उसका पद छीन सकते हो। वह तुम्हें यहाँ सुरक्षित और स्वस्थ नहीं छोड़ेगा।

अगर मैं तुम होते तो मैं हर छाया पर नज़र रखता। मैं हर कोने पर नज़र रखता क्योंकि आप कभी नहीं जानते कि हत्यारा कहाँ छिपा हो सकता है। इस बिंदु पर एंटीपेटर जो कह रहा था, उसमें शायद कुछ सच्चाई हो।

तुम्हें पता है, एरिस्टोबुलस एक बहुत ही महत्वाकांक्षी व्यक्ति था, और हेराक्लियस उसके अधिकार के लिए खतरा था। इसलिए, हेराक्लियस ने फैसला किया, अच्छा, अरे, मैं क्या करने जा रहा हूँ? और एंटीपेटर ने कहा, ठीक है, हमें तुम्हें यहूदियों के नेता के रूप में वापस स्थापित करना होगा और एरिस्टोबुलस को वहाँ से निकालना होगा। इसलिए, एंटीपेटर ने हेराक्लियस को कुछ भाड़े के सैनिकों को काम पर रखने के लिए पैसे दिए।

और ये भाड़े के सैनिक हेराक्लियस को फिर से सिंहासन पर बिठाने जा रहे हैं। यरूशलेम के सिंहासन पर वापस। इसलिए, हेराक्लियस अपने सैनिकों के साथ यरूशलेम की ओर कूच करता है।

वे उस मंदिर की घेराबंदी करते हैं जहाँ एरिस्टोबुलस को रखा गया है। और दोनों भाइयों को अंततः एहसास होता है कि वह अपनी सेना की इस छोटी टुकड़ी के साथ दीवारों को तोड़ने में सक्षम नहीं होने वाला है। तभी उन्हें खबर मिलती है कि रोम पूर्व में आ गया है।

देखिए, रोमन सेनापति पोम्पी मूल रूप से एशिया माइनर के आसपास के उत्तरी क्षेत्रों में स्थित पोंटस प्रांत में कुछ मामलों को निपटाने के लिए पूर्व में आया था। और वहाँ, वह विद्रोह की संभावना को कम करने और इसे रोमन शक्तियों में एक प्रांत के रूप में जोड़ने का प्रयास करने जा रहा है। और जब वह वहाँ होता है, तो वह तय करता है कि वह सेल्यूसिड साम्राज्य के अवशेषों से भी निपटने जा रहा है, जिसे इस समय शायद ही साम्राज्य कहा जा सकता है।

सेल्यूसिड्स एक दूसरे को चीर रहे थे। वे इस बात पर लड़ रहे थे कि कौन नेता बनने जा रहा है, कौन उत्तराधिकारी है, कौन वैध है, कौन वैध नहीं है। और रोम सीरिया की समस्याओं को अपने व्यापारिक हितों के लिए एक संभावित खतरे के रूप में देख रहा था।

और मैं कहता हूँ, रोम ने इस युग में कभी भी बिना किसी अच्छे कारण के कुछ नहीं किया। वे बेहद व्यावहारिक लोग थे। और उन्होंने सीरिया को आसान व्यापार के लिए एक संभावित खतरे के रूप में देखा।

उन्हें इस बात की संभावना दिख रही थी कि सीरिया पर पार्थिया का आक्रमण हो सकता है। और रोम पार्थिया से डरता था। पार्थिया बहुत बड़ा था।

पार्थिया मजबूत था। पार्थिया का उनसे पहले भी संघर्ष हुआ था। अगर पार्थिया सीरिया में आकर जीत जाता, तो इसका मतलब था कि पूर्व में रोम के लिए कुछ परेशानी हो सकती थी।

इसलिए, उन्होंने तय किया कि अब सीरियाई, सीरियाई साम्राज्य, सेल्यूसिड साम्राज्य को भी अपने क्षेत्र में शामिल करने का समय आ गया है। तो वे यहाँ हैं। पोम्पी सीरिया के दमिश्क शहर में है।

और वह वहाँ के मामलों को संभालने की कोशिश कर रहा है। हेराक्लियस और एरिस्टोबुलस ने उत्तराधिकार की अपनी छोटी सी समस्या को सुलझाने के लिए रोम से मदद माँगने का फैसला किया। उन दोनों ने सोचा कि उनका दावा बेहतर है।

अरिस्टोबुलस, मूल रूप से अपने व्यक्तित्व और अपनी अनुनय-विनय की शक्तियों आदि के कारण, और हेराक्लियस क्योंकि उसे वास्तव में उत्तराधिकारी नामित किया गया था। इसलिए वे दोनों अपने दूतों को पोम्पी के पास भेजते हैं। वहाँ क्या होता है? खैर, हम यहाँ इस बारे में बात करने के लिए कुछ समय लेंगे कि इस पूरे मामले में रोम कहाँ से आया और पोम्पी यहाँ क्या कर रहा था।

हम जो कुछ भी बता सकते हैं उसके अनुसार रोम शहर की स्थापना लगभग 625 ईसा पूर्व हुई थी। रोम की स्थापना क्यों हुई और इसकी स्थापना कैसे हुई, इसके बारे में कई अलग-अलग किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। संभवतः सबसे प्रसिद्ध यह विचार है कि रोमुलस और रेमस नामक दो भाई थे, जो मार्स और निम्फ के पुत्र थे।

कहानी कहती है कि उन्हें एक मादा भेड़िया ने दूध पिलाया था, इसलिए एक प्रसिद्ध मूर्ति है जिसमें दो छोटे लड़के इस मादा भेड़िया को दूध पिला रहे हैं। लेकिन किसी भी तरह से, यह विचार कि रोम में ये दिव्य उत्पत्ति थी, बिल्कुल भी अनोखा नहीं था। उन दिनों लगभग हर शहर ने किसी न किसी तरह की दिव्य उत्पत्ति का दावा किया था।

लेकिन लगभग एक सदी से भी ज़्यादा समय तक, रोम का चुनाव राजा द्वारा किया जाता था और चुने हुए राजाओं द्वारा ही उस पर शासन किया जाता था। जब आप इसके बारे में सोचते हैं तो यह लगभग शब्दों के विरोधाभास जैसा लगता है। आप जानते हैं, राजा आमतौर पर चुने नहीं जाते।

राजा आमतौर पर इस भूमिका में पैदा होते हैं, लेकिन रोम के मामले में ऐसा नहीं था। उनके राजा शासक कुलीन वर्ग से चुने जाते थे। इसलिए, 500 ईसा पूर्व में, उन्होंने अपनी सरकार का स्वरूप बदल दिया और वे एक गणतंत्र बन गए।

और गणतंत्र का नेतृत्व सीनेटरों द्वारा किया जाता था जो अपने स्थान के लिए भी चुने जाते थे। फिर से, सभी कुलीनों को यह चुनने का मौका मिला कि वे किसे अपना सीनेटर बनाना चाहते हैं। लेकिन जिस तरह की सरकार उन्होंने चुनी वह हमें उन सरकारों की तुलना में बहुत प्रबुद्ध लगती है जो किसी न किसी तरह के तानाशाह या तानाशाह या किसी तरह के पुजारी द्वारा चलाई जाती थीं।

बल्कि, उनके पास ऐसे लोगों का एक समूह है जो एक साथ मिलकर लोकतांत्रिक तरीके से अपने निर्णय लेते हैं कि उन्हें क्या करना है। खैर, वे जो करने जा रहे थे वह विस्तार करना था। जल्द ही, उन्हें पता चला कि उनका रोम शहर उनकी ज़रूरतों या उनकी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त बड़ा नहीं था।

और इसलिए, उन्होंने इटली के अन्य शहरों पर विजय प्राप्त करना और उनसे बातचीत करना शुरू कर दिया। पूरे इतालवी प्रायद्वीप में, उनकी यह नीति थी कि एक बार जब वे किसी पर विजय प्राप्त कर लेते थे या शायद उनसे बातचीत करते थे, तो उनके द्वारा जीते गए शहरों को वास्तव में रोम में नागरिकता प्रदान की जाती थी। तो, मान लीजिए कि आप रोम से कई सौ मील दूर एक शहर में हैं, लेकिन आपको रोम शहर में रहने वाले नागरिक के सभी विशेषाधिकार प्राप्त होंगे।

तो, आप अपने वोट प्राप्त कर सकते हैं, आप सार्वजनिक धन प्राप्त कर सकते हैं, और ये सभी अद्भुत चीजें। इन इतालवी शहरों के बीच इतनी अधिक सौहार्दपूर्ण भावना बनी हुई है कि थोड़ी देर बाद, जब हैनिबल नाम का एक व्यक्ति, जो कार्थेज से था, ने फैसला किया कि वह रोम के खिलाफ मार्च करने जा रहा है, उनके बीच कई संघर्षों के बाद, उसने इन इतालवी शहरों में से कुछ को विद्रोह में शामिल करने की कोशिश की। और उन्होंने सभी को मना कर दिया।

ऐसा इसलिए नहीं कि वे रोम से बहुत डरते थे, बल्कि इसलिए कि उन्हें उस समय रोम के साम्राज्य का हिस्सा होने के लाभ पसंद थे। वैसे भी, 210 ईसा पूर्व तक चीजें इसी तरह चलती रहीं। 210 ईसा पूर्व में, रोम को सिसिली द्वीप के शहर पर कब्ज़ा करना पड़ा क्योंकि इसका इस्तेमाल आक्रमणों और अन्य चीज़ों के लिए आधार के रूप में किया जा रहा था।

इसलिए, उन्होंने फैसला किया कि वे सिसिली पर कब्ज़ा करना चाहते हैं। लेकिन जब वे इस बिंदु पर पहुँचे, तो उन्होंने फैसला किया कि वे सिसिली को उसी तरह के अधिकार नहीं दे सकते जो वे इतालवी प्रायद्वीप के शहरों को दे रहे थे, जिसके पीछे कई अलग-अलग कारण थे। लेकिन मुख्य कारणों में से एक यह था कि उन्हें ऐसा नहीं लगा कि इसमें परिष्कार के समान स्तर हैं और इसी तरह की अन्य बातें।

इसलिए, इसके बजाय, उन्होंने सिसिली द्वीप को एक प्रांत का नाम दिया। और यह रोमन साम्राज्य का पहला प्रांत बन गया। और एक प्रांत के रूप में, वे एक सैन्य नेतृत्व द्वारा शासित थे और उनके पास रोम के नागरिकों के समान अधिकार नहीं थे और उन्हें रोम को कर देना पड़ता था।

ज़्यादातर समय किसी प्रांत का हिस्सा होना अच्छा नहीं लगता था। लेकिन दूसरी तरफ़, रोमनों ने सुरक्षा की पेशकश की। उन्होंने कुछ व्यवस्था की पेशकश की।

और अगर स्थानीय स्तर पर कई तरह की परेशानियाँ होतीं, जैसे कि सेल्यूसिड साम्राज्य में विभिन्न गुटों के बीच चल रही चीज़ें, तो रोमन आकर उसे सुलझा लेते। और जब रोमन आकर चीज़ों को सुलझा लेते, तो वे सुलझ ही जातीं। तो, चलिए यहाँ एक मिनट के लिए पोम्पी के बारे में बात करते हैं।

इसलिए, बाद के गणराज्य में, प्रांतों का प्रशासन मुख्य रूप से जनरलों द्वारा किया जाता है। वे रोमन साम्राज्य के लिए एक तरह की रक्षात्मक सीमा के रूप में काम करते हैं। और इसलिए, पोंटस को रोमनों के नियंत्रण में जोड़ने के लिए पोम्पी को पूर्व में भेजा गया था।

और उन्होंने यह भी निर्णय लिया कि सीरिया को भी नियंत्रण में लाना उनके और रोम के सर्वोत्तम हित में होगा। और इसलिए, जब वे सीरिया से निपट रहे थे, तब यहूदिया से ये दूत आए और कहा, अरे, हम चाहते हैं कि आप हमारे लिए कुछ समस्याओं का समाधान करें। यहाँ भाइयों के बीच थोड़ी-बहुत मित्रतापूर्ण असहमति हो रही है।

अब, यहूदियों का रोम के साथ थोड़ा बहुत इतिहास था, और ज़्यादा इतिहास नहीं, लेकिन थोड़ा बहुत इतिहास था। यहूदा ने पहली बार एंटीओकस एपिफेन्स के दिनों में रोम के साथ औपचारिक संबंध बनाए थे। और इस तरह की पौराणिक कथाएँ थीं जो उन्होंने विकसित की थीं, जिसमें कहा गया था कि यहूदी और रोमन एक दूसरे के दूर के चचेरे भाई थे।

तो यह उनकी अपील थी। उन्हें यह पत्र वापस मिल गया था, जो कि - मेरा मानना है कि यह मैकाबीज़ की पुस्तकों में दर्ज है - जिसमें बताया गया है कि वे रोमनों के साथ भाईचारे की यह वाचा कैसे रखेंगे, जहाँ तक हम जानते हैं, इससे उन्हें कभी कोई लाभ नहीं हुआ। यह सिर्फ़ एक औपचारिक दस्तावेज़ था।

बस यही था। इसलिए पोम्पी सीरिया पहुँचता है। हिरकेनस और एरिस्टोबुलस दोनों उसे आकर्षित करते हैं।

वे कहते हैं, अरे, आप जानते हैं, हम आपके सहयोगी हैं। हम चाहते हैं कि आप इस मामले को सुलझाएँ। और मुझे यकीन है कि पोम्पी ने कहा होगा, कौन? क्या? लेकिन वैसे भी, वे इस पर नज़र रखते हैं।

और निश्चित रूप से, पोम्पी ने कहा, ठीक है, मैं तुम्हें बताता हूँ कि हम क्या करने जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुझे वास्तव में सीरिया में चीज़ों को समझना और उन्हें ठीक करना है। तो, तुम दोनों लोग बस चुपचाप बैठो।

और आखिरकार, मैं यह सब पता लगाने जा रहा हूँ। खैर, एरिस्टोबुलस को डर लगता है। उसे लगता है कि चीज़ें उस तरह नहीं हो रही हैं जैसा उसने सोचा था।

और इसलिए, वह तुरंत यरूशलेम वापस चला जाता है और शहर को मजबूत करना शुरू कर देता है, ताकि अगर ऐसा लगे कि रोमन उससे शहर छीनने की कोशिश करेंगे तो वह उसे बचा सके। खैर, पोम्पी की प्रतिक्रिया काफी हद तक वैसी ही है जैसी आप उम्मीद कर रहे होंगे। पोम्पी ने कहा, ठीक है, सीरिया इंतज़ार कर सकता है।

मैं पहले इस छोटे से दुष्ट नवांगंतुक से निपटना चाहता हूँ। इसलिए, वह तुरंत यरूशलेम जाता है और शहर की घेराबंदी करता है। यरूशलेम में प्रवेश पाने के लिए उसे शहर की घेराबंदी करने में तीन महीने लगते हैं।

उसने 63 ईसा पूर्व में प्रायश्चित के दिन मंदिर के द्वार तोड़ दिए। जोसेफस के विवरण के अनुसार, पुजारियों ने अपनी प्रार्थनाएँ छोड़ने से इनकार कर दिया और अपने बलिदान करने से पीछे हटने से इनकार कर दिया।

और पोम्पी की सेना ने उन्हें वेदियों पर काट डाला। इसके अलावा, पोम्पी ने खुद पवित्रतम स्थान में प्रवेश करने पर जोर दिया। आप जानते हैं, यह उस तरह की बात है जिससे पुराने नियम में बिजली गिरने का खतरा होता है।

लेकिन वह परम पवित्र स्थान में जाता है क्योंकि उसने इस तरह की चीज़ों के बारे में कुछ कहानियाँ सुनी हैं। और वह देखना चाहता था कि वहाँ वास्तव में क्या है। उसकी रिपोर्ट कुछ भी नहीं थी।

लेकिन इससे गधे के सिर और इस तरह की अन्य बातों के बारे में अफ़वाहें उड़ना बंद नहीं हुआ। उन्होंने हेराक्लिटस को उच्च पुरोहित पद पर बहाल किया। और उन्होंने यहूदियों के धर्म के प्रति अपना सम्मान दिखाने के लिए भगवान भगवान के लिए मंदिर में बलि चढ़ाई।

तो, वह बिल्कुल भी बुरा नहीं था। दूसरी ओर, डेड सी स्क्रॉल, वह पाठ जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था, 4QMMT, बहुत स्पष्ट रूप से बताता है कि यहूदियों को गैर-यहूदियों द्वारा किए जाने वाले किसी भी बलिदान को अस्वीकार कर देना चाहिए क्योंकि वे केवल राक्षसों के लिए बलिदान कर रहे हैं। लेकिन वैसे भी, अरिस्तोबुलस और उसके बेटों का क्या हुआ? खैर, उन्हें बंदी बनाकर रोम ले जाया गया।

और यहाँ एक कहानी बंधी हुई है क्योंकि, जाहिर है, रोमन जेलों में भी किसी अजीब कारण से सिम्स की तरह ही रिसाव होता था। शायद यह कम सुरक्षा वाली जेलों की तरह ही था। या शायद वहाँ बहुत से लोग थे जिन्हें बहुत आसानी से रिश्वत दी जा सकती थी।

लेकिन ऐसा लगता है कि एरिस्तोबुलस और उसके बेटों को जेल में बंद रखना लगभग असंभव था। वैसे भी, हेराक्लिटस के उच्च पुजारी के रूप में स्थापित होने के बाद, हमारे पास यहाँ कुछ मुद्दे हैं जिनसे हमें रोमनों के अनुसार निपटना होगा। शहर में प्रवेश करने के बाद, जैसा कि मैंने कहा, उसे यहाँ की घटनाओं को निपटाना होगा।

गैबिनियस नाम के एक व्यक्ति को प्रभारी बनाकर छोड़ देता है। गैबिनियस उसका एक अधिकारी है। गैबिनियस एक दिलचस्प व्यक्ति है।

हम वास्तव में इस आदमी के बारे में काफी कुछ जानते हैं। उसका करियर बहुत लंबा और शानदार रहा है और रोमन राजनीति के विभिन्न पहलुओं में उसका बहुत हाथ रहा है। और यह एक तरह से अजीब है।

हम उसके बारे में बहुत ज़्यादा नहीं सुनते। लेकिन गैबिनियस, मुझे पूरा यकीन है कि वह लॉन की घास काटने वाले लोग हैं। मुझे पता लगाने दो।

ठीक है। क्या हम ठीक हैं? ठीक है। तो, आइए यहाँ देखें। आइए देखें कि मैं अपने नोट्स में कहाँ हूँ।

इसलिए, जब अरिस्टोबुलस को रोम ले जाया गया और हेराक्लिटस को उच्च पुजारी के पद पर बिठाया गया, तो रोमियों ने तय किया कि उसके नागरिक अधिकार को कम किया जाना चाहिए। और इसलिए, रोम ने यरूशलेम को काफी हद तक गैबिनियस के प्रशासन के अधीन कर दिया, जो कुछ समय के लिए बहुत ही योग्य राजनीतिज्ञ था। लेकिन हेराक्लिटस के पास यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी थी कि करों का भुगतान किया जाए और सामान्य चीजें जो उच्च पुजारी को करनी होती हैं।

लेकिन जहाँ तक सेनाओं के प्रशासन और उस तरह की चीज़ों का सवाल है, तो रोमनों ने खुद ही उस पर नियंत्रण करने का फैसला किया। एंटीपेटर ने इस स्थिति का फ़ायदा उठाया। एंटीपेटर ने हेराक्लिटस को अपने प्रभाव में लेना जारी रखा।

और रोमनों ने एंटीपेटर को खुद एक योग्य राजनीतिज्ञ के रूप में पहचाना। और इसलिए, वह अपने लिए एक जगह बनाने में कामयाब हो रहा था। अब जो कुछ किया गया, उसमें से एक यह था कि यहूदिया को अपने कुछ यूनानी-आबादी वाले क्षेत्रों को छोड़ने के लिए मजबूर किया गया, वे क्षेत्र जो अरिस्टोबुलस और अलेक्जेंडर जूनियस द्वारा जीते गए थे।

अब, यहाँ क्या हुआ जब इन शहरों को यहूदी नियंत्रण से मुक्त कर दिया गया, तो उन जगहों पर रहने वाले यहूदी अब अवांछित व्यक्ति बन गए। और उनमें से बहुत से लोग यरूशलेम लौट आए और एक तरह का, ठीक है, आप इसे उपनगर नहीं कहेंगे, लेकिन यरूशलेम के चारों ओर एक बस्ती विकसित हुई, जिसने आबादी को बढ़ाया और इस बिंदु पर वास्तव में यरूशलेम के संसाधनों पर कर लगाया। इसलिए, शरणार्थियों की भीड़, रोमियों को अब करों में वृद्धि की आवश्यकता थी क्योंकि आपको अपने रोमन विशेषाधिकारों, रोमनों द्वारा नियंत्रित और संरक्षित होने के विशेषाधिकारों के लिए भुगतान करने की आवश्यकता है, हम कहेंगे।

आप सोच सकते हैं कि यह बात इस समय यहूदिया के लोगों को अच्छी नहीं लगती। तो, आइए हेराक्लिटस के बारे में थोड़ी बात करें और देखें कि यहाँ क्या होता है। जैसा कि हम कहते हैं, भले ही वह उच्च पुजारी है और हम कह सकते हैं कि यरूशलेम में नाममात्र का अधिकारी है, लेकिन एंटीपेटर और रोमन वास्तव में वही हैं जो इस समय फैसले ले रहे हैं।

तो, एंटीपेटर, सिंहासन के पीछे की शक्ति। अब यहाँ कई संघर्ष होने जा रहे हैं कि वास्तव में यरूशलेम को कौन नियंत्रित करने जा रहा है। जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, रोमन, मुझे देखना है, मैं क्या कह रहा हूँ? रोमन जेलों में बहुत अधिक रिसाव होता है।

अरिस्टोबुलस द्वितीय का पुत्र सिकंदर 57 ईसा पूर्व में रोम से भाग गया था, और उसने यहूदिया की भूमि पर कई किले जल्द कर लिए थे। वह उन स्थानों पर खुद को बहुत अच्छी तरह से स्थापित करने में कामयाब रहा। यरूशलेम में ही विद्रोह शुरू हो जाता है, क्योंकि वहाँ एक पार्टी है जो सिकंदर को महायाजक और नेता के रूप में रखने का समर्थन करती है, और रोमन सेनापति गैबिनियस को इस विद्रोह को दबाने के लिए मजबूर होना पड़ता है। खैर, वह हेराक्लिटस पर अनिवार्य रूप से अक्षम होने का आरोप लगाता है और क्योंकि हेराक्लिटस अक्षम है, इसलिए वह फैसला करता है कि हेराक्लिटस के पास वास्तव में अभी भी बहुत अधिक शक्ति है।

इसलिए, गैबिनियस उसे बचाता है और फिर वह जूडियन भूमि और प्रांत का एक तरह का सुधार करने के लिए आगे बढ़ता है। हम कभी-कभी इसे गैबिनियस के सुधार कहते हैं, लेकिन गैबिनियस वास्तव में रोमन साम्राज्य के आसपास कई नीतियों में सुधार करने का प्रभारी था। लेकिन उसने जो कुछ किया, वह यह था कि उसने सिकंदर को यरूशलेम से बाहर निकालने के बाद उसे वापस रोम भेज दिया।

वह हेराक्लिटस को उच्च पुजारी बने रहने की अनुमति देता है। इस बिंदु पर, उसे पूरी तरह से नागरिक शक्ति से वंचित कर दिया जाता है। और यहूदिया को पाँच प्रशासनिक जिलों में विभाजित कर दिया जाता है।

प्रत्येक को अपने विधायक के रूप में कार्य करने के लिए एक परिषद दी जाती है, और प्रत्येक को लोगों में से, यहूदियों के कुलीन लोगों में से चुना जाता है। हमारे पास एक और जेलब्रेक है। इसलिए, राष्ट्र को गैबिनियस द्वारा यहाँ पुनर्गठित किए जाने के बाद, हमारे पास इस बार एक और बेटा अरिस्टोबुलस है और उसका बेटा एंटीगोनस, जो रोम से भाग गया था, और वे अब फिर से यहूदिया लौट आए हैं।

वे एक सेना खड़ी करते हैं और एक बार फिर यरूशलेम पर कब्जा करने की कोशिश करते हैं। गैबिनियस को एक बार फिर विद्रोह को दबाना पड़ता है और अरिस्टोबुलस को वापस रोम भेज दिया जाता है। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि एंटीगोनस को यहूदिया में रहने की अनुमति दी जाती है।

कृपया बताएं, एंटीगोनस को यहूदिया में रहने की अनुमति क्यों दी गई? खैर, जाहिर है कि उसकी माँ, एंटीगोनस की माँ, ने गैबिनियस से उसे रहने की अनुमति देने की विनती की और विनती की क्योंकि, आप जानते हैं, एक माँ को अपने बेटे के बिना नहीं रहना चाहिए। मुझे नहीं पता कि उसने वास्तव में क्या कहा। जाहिर है, इस महिला के पास राजी करने की असाधारण शक्ति थी क्योंकि रोमनों ने एंटीगोनस को यहूदिया में रहने के लिए सहमत कर लिया था।

एक साल बाद, सिकंदर ने एक और सेना खड़ी की। एक बार फिर, इस विद्रोह को भी रोमनों ने कुचल दिया। इसलिए, इस पूरी अवधि में, हम बार-बार इस बात के लिए संघर्ष देखते हैं कि यरूशलेम पर किसका नियंत्रण होगा।

हमारे पास हिरकेनस है, जो उच्च पुजारी है। हमारे पास एंटिपेटर है, जो पुजारी के पीछे की शक्ति है। हमारे पास रोमन हैं, जो चीजों को यथासंभव व्यवस्थित रखने की कोशिश कर रहे हैं।

और फिर हमारे पास एरिस्टोबुलस और उसके बेटे हैं, जो हर तरह की परेशानी खड़ी करते रहते हैं। अब, रोमन, यहूदिया में इस समस्या से निर्णायक रूप से निपटने में असमर्थ होने का एक कारण यह है कि उनके पास खुद की कुछ समस्याएँ हैं। इस समय रोमन गृह युद्ध चल रहा है।

प्रांतों में, हमारे पास ये विभिन्न सेनापति हैं जो सत्ता के लिए होड़ कर रहे हैं और अपने क्षेत्रों और जोतों को बढ़ाना चाहते हैं। क्षेत्रों का मतलब पैसा था, और ये लोग प्रांतों में इस तरह के अभियान चलाकर बहुत अमीर बन रहे थे। उन्हें रोमन सीनेट से भी परेशानी थी।

रोमन सीनेट को जनरलों पर भरोसा नहीं था, आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि जनरल अविश्वसनीय थे, लेकिन उन्हें अतीत में रोम में सैनिकों को लाने और रोमन जनरलों द्वारा तख्तापलट के प्रयासों से कुछ समस्याएँ हुई थीं। सीनेट चाहती थी कि जनरल अपनी सेनाओं के साथ जितना संभव हो सके उतना दूर रहें। जनरलों ने इन यूनियनों का गठन करना शुरू कर दिया है, अगर आप चाहें तो, त्रिमूर्ति, जैसा कि हम उन्हें कहते हैं, अपनी खुद की शक्ति बढ़ाने के लिए, लेकिन एक-दूसरे से टकराने से बचने के लिए भी।

यह ऐसा है जैसे हर कोई कहता है, ठीक है, हम अपने क्षेत्र में रहेंगे, आप अपने क्षेत्र में रहें, और हम ज़रूरत पड़ने पर एक-दूसरे की मदद कर सकते हैं। पहली त्रिमूर्ति में पोम्पी शामिल था, बेशक हम उसे अब तक अच्छी तरह से जानते हैं, जूलियस सीज़र नाम का एक साथी, हम उसके बारे में बाद में और सुनेंगे, और क्रैसस नाम का एक साथी। इन तीन जनरलों ने इस गठबंधन का गठन किया, पहली त्रिमूर्ति।

जब 53 ईसा पूर्व में क्रैसस की मृत्यु हुई, तो पहली त्रिमूर्ति एक तरह से विघटित हो गई। 49 ईसा पूर्व में सीज़र और पोम्पी के बीच युद्ध छिड़ गया। जैसा कि हमने कहा, इनमें से हर एक व्यक्ति बहुत महत्वाकांक्षी है; हर कोई अपनी संपत्ति बढ़ाने की कोशिश कर रहा है, और अपनी संपत्ति बढ़ाने में, वे एक-दूसरे के रास्ते में आ रहे हैं, और इसका परिणाम जनरलों के बीच इन लड़ाइयों और युद्धों में होता है।

जब प्रांतों में सेनापति एक दूसरे से लड़ रहे होते हैं, तो हर कोई पीड़ित होता है। आंशिक रूप से, और इस पूरे काल में हम जो विषय देखने जा रहे हैं, उनमें से एक यह है कि इन सेनापतियों को अपनी सेनाओं को एक दूसरे के खिलाफ लड़ने के लिए सुसज्जित करने के लिए धन की आवश्यकता होती है। उन्हें वह धन कहाँ से मिल रहा है? वे प्रांतों में लोगों पर कर बढ़ाकर कर लगाकर इसे प्राप्त कर रहे हैं। यहूदिया को शुरू में पोम्पी का समर्थन करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

बेशक, पोम्पी वह व्यक्ति था जो पहले से ही पूर्व में था, एक तरह से शैतान की तरह, आप जानते हैं कि किस तरह की चीज है, लेकिन अंततः पोम्पी की हत्या कर दी गई, और इस तरह से यहूदिया पोम्पी की पकड़ से मुक्त हो गया, और अब उन्हें जूलियस सीज़र के साथ खुद को खुश करने की ज़रूरत महसूस हुई। वे वास्तव में डरते थे कि उन्हें जूलियस सीज़र द्वारा दंडित किया जाएगा, लेकिन ऐसा नहीं था, क्योंकि यहूदियों को दंडित करना जूलियस सीज़र के सर्वोत्तम हित में नहीं होता। वास्तव में, वे सोच रहे थे कि वे ठीक वही कर रहे थे जो उन्हें रोमन साम्राज्य का हिस्सा होने के नाते करना चाहिए था।

आप अपने राज्य के ऊपर बैठे जनरल का समर्थन करते हैं। तो, इस समय यहूदिया में क्या चल रहा है? इस समय यहूदिया में बहुत कुछ चल रहा है। जूलियस सीज़र ने फैसला किया कि उसे गृहयुद्ध में हस्तक्षेप करने के लिए मिस्र की यात्रा करनी होगी।

हम यहाँ किस गृहयुद्ध की बात कर रहे हैं? हम एक भाई और बहन की बात कर रहे हैं जो इस बात पर युद्ध कर रहे हैं कि मिस्र पर कौन शासन करेगा। वैसे, ये भाई और बहन पति-पत्नी भी हैं, क्योंकि टॉलेमिक मिस्र में चीजें इतनी आगे बढ़ गई हैं। मूल रूप से, पुराने समय के फिरोन की तरह, जहाँ फिरोन अक्सर अपनी बहन से शादी करता था क्योंकि वे रक्त-वंश को शुद्ध रखना चाहते थे, टॉलेमी ने भी वही प्रथा अपनाई है।

अब, इस मामले में, भाई और बहन एक दूसरे से नफरत करते हैं। तो, हमारे पास टॉलेमी है, हमारे पास क्लियोपेट्रा VII है, और उनमें से प्रत्येक राजा या शासक बनना चाहता है, और उनमें से प्रत्येक दूसरे को मारने की कोशिश कर रहा है। खैर, मिस्र में गृह युद्ध रोम के हितों के लिए अच्छा नहीं है क्योंकि वे साम्राज्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए भोजन के लिए मिस्र पर निर्भर हैं।

तो, जूलियस सीज़र जाता है, वह क्लियोपेट्रा को नीचे गिराने की कोशिश करता है और यह सुनिश्चित करता है कि टॉलेमी सिंहासन पर बना रहे। इसलिए, वह टॉलेमी के साथ अपनी मुलाकात के लिए एक एंटे रूम में इंतजार कर रहा था जब कुछ लोग एक बड़े गलीचे को लेकर मार्च करते हुए आए। उन्होंने उसके सामने गलीचा बिछाया, और इस गलीचे के अंदर क्लियोपेट्रा के अलावा और क्या होना चाहिए था? इसलिए, क्लियोपेट्रा खुद को जूलियस सीज़र के सामने पेश करती है, और तुरंत वह उसकी सुंदरता से प्रभावित हो जाता है, उससे प्यार करने लगता है।

जब टॉलेमी जूलियस सीज़र से मिलने के लिए आता है, तो वह देखता है कि उसे इस तरह से हराया गया है, जिसकी वह उम्मीद भी नहीं कर सकता था। इसलिए, टॉलेमी को जेल में डाल दिया जाता है, और सीज़र क्लियोपेट्रा को मिस्र का शासक बनाने की योजना बना रहा है। खैर, मिस्र के लोगों के लिए, यह स्वीकार्य नहीं था क्योंकि वे अभी भी अधिकांश भाग के लिए टॉलेमी को पसंद करते थे।

और इसलिए, अलेक्जेंड्रिया के लोग उठ खड़े हुए और महल की घेराबंदी कर दी। सीज़र महल के अंदर फंस गया है, और इस समय, उसकी सेना उसे यहाँ की समस्या से निकालने के लिए अपर्याप्त है। खैर, एंटीपेटर को एक अवसर दिखाई देता है।

और इसलिए, वह यहूदी सैनिकों को लाता है, और वह नाबाटिया और अन्य क्षेत्रों से भाड़े के सैनिकों का एक समूह लाता है, और वे मिस्र की ओर बढ़ते हैं, जो उनके लिए काफी आसान मार्च है, और वे सीज़र को महल से बाहर निकालने के लिए आगे बढ़ते हैं जहाँ वह फँसा हुआ है। उनकी सहायता के लिए एक एहसान के रूप में, जूलियस सीज़र ने एंटीपेटर को यहूदिया का अभियोजक नियुक्त किया। हेराक्लियस को एक और उपाधि मिलती है।

उन्हें एथनार्क कहा जाता है। अब, इन उपाधियों के बीच क्या अंतर है? हम वास्तव में नहीं जानते, क्योंकि तथ्य यह है कि वे समय-समय पर काफी महत्व बदलते हैं। इसलिए, उन सभी को सीधे रखना थोड़ा मुश्किल है, लेकिन ऐसा लगता है कि प्रॉक्पूरेटर एक सैन्य उपाधि थी, जबकि एथनार्क एक नागरिक उपाधि थी।

कम से कम इस बिंदु पर, हम ऐसा कह सकते हैं। इसके अलावा, यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण बिंदु था। खैर, हाँ, इसके अलावा, एंटीपेटर के बेटे, फासेल और हेरोदेस नाम के एक व्यक्ति को गवर्नर बनाया गया है, और हम गवर्नर हेरोदेस के बारे में और अधिक बात करने जा रहे हैं और निश्चित रूप से, गवर्नर हेरोदेस के बारे में बहुत कुछ।

उन्हें राज्यपाल नामित किया गया है। हेरोदेस को गलील का क्षेत्र अपना क्षेत्र बनाने के लिए दिया गया था, लेकिन हेरोदेस ने तुरंत ही परेशानी खड़ी कर दी, क्योंकि गलील के राज्यपाल के रूप में नामित होने के बाद, गलील में दंगा भड़क गया। खैर, हेरोदेस ने बहुत ही निर्दयता से दंगे को दबा दिया, और बहुत सारे गलीली मारे गए।

इतने सारे कि यहूदी महासभा को लगा कि वह हद पार कर गया है, और उन्होंने इस युवक को सबक सिखाने का फैसला किया। इसलिए, उन्होंने उसे महासभा के सामने पेश होने के लिए बुलाया ताकि वह इन गैलीलियों को मारने के अपने कामों का जवाब दे सके। खैर, हेरोद महासभा के सामने पेश होने के लिए तैयार हो गया, और वह अपनी सेना के साथ पूरे महासभा को मारने के इरादे से आया।

सौभाग्य से, एंटीपेटर उसे काबू में करने में सफल रहा और उससे कहा, नहीं बेटा, तुम ऐसा मत करो। हम इसे अच्छे से, सरल और आसान तरीके से करने जा रहे हैं। फिर वह महासभा के पास गया और महासभा को राजी किया कि वे हेरोदेस के खिलाफ किसी भी तरह का आरोप न लगाएं और पूरी घटना को अनदेखा करके वापस घर चले जाएं, जिसे महासभा ने अनिच्छा से स्वीकार कर लिया।

हेरोद, शुरू से ही यह दर्शाता है कि वह किस तरह का व्यक्ति बनने जा रहा है: एक महान जुनूनी व्यक्ति और एक महान महत्वाकांक्षा वाला व्यक्ति और एक ऐसा व्यक्ति जो अपमान को हल्के में नहीं लेता। ठीक है, अब यहाँ एक बिंदु है जिस पर मैं वास्तव में ध्यान देना चाहता हूँ, वह है जूलियस सीज़र द्वारा यहूदिया के लोगों को दिए गए उपकारों में से एक, निश्चित रूप से, इस बिंदु तक उनके इतिहास के बारे में थोड़ा बहुत जानते हुए, यह जानते हुए कि एंटीओकस एपिफेन्स ने उन्हें हेलेनिज़्म और ग्रीक धर्म में परिवर्तित करने के लिए मजबूर करने का प्रयास कैसे किया था।

जूलियस सीज़र ने एक कानून पारित किया जिसने रोमन साम्राज्य में यहूदी धर्म को एक संरक्षित धर्म बना दिया।

इसका मतलब यह था कि यहूदियों को धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता था। उन्हें सम्राट की पूजा करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता था। देखिए, इस समय रोम का शाही पंथ अधिकांश प्रांतों में फैल रहा था।

इसे आपके समर्पण, टीम के खिलाड़ी बनने की आपकी इच्छा, अपने शहरों के बीच में रोम की आत्मा के रूप में सीज़र के लिए एक वेदी स्थापित करने और फिर सीज़र को बलिदान देने के संकेत के रूप में देखा गया था। खैर, यहूदियों को उस आवश्यकता से छूट दी गई थी। इसके बजाय, उन्हें जो करने की आवश्यकता थी, वह सम्राट के लाभ के लिए भगवान को दैनिक बलिदान चढ़ाना था।

और वे महान विद्रोह के समय तक ऐसा करते रहे जब उन्होंने उस भेंट को काट दिया। लेकिन किसी भी दर पर, यह तथ्य कि यहूदी धर्म अब एक संरक्षित धर्म है, थोड़े समय बाद काम आएगा जब यहूदी खुद को कैलीगुला और नीरो जैसे लोगों के साथ मुद्दों में उलझा हुआ पा रहे थे, जिन्होंने वास्तव में अपनी प्रेस विज्ञप्तियों को गंभीरता से लिया और सोचा कि वे वास्तव में देवता थे। और हमने अलेक्जेंड्रिया के फिलो के बारे में काफी बात की है।

फिलो को कैलीगुला के पास जाना पड़ा जब कैलीगुला ने जोर देकर कहा कि यरूशलेम के मंदिर में उसकी एक मूर्ति रखी जाए। और उसने अपने तर्क प्रस्तुत किए और, आप जानते हैं, हम एक संरक्षित धर्म हैं। यार, तुम हमारे साथ ऐसा नहीं कर सकते।

आखिरकार, कैलीगुला, यह एक तरह से विचित्र प्रकार की गोधूलि क्षेत्र जैसी चीज थी क्योंकि कैलीगुला उन्हें ले जाता है और उन्हें रोम के चारों ओर दिखाता है और वह कहता है, इन सभी अद्भुत चीजों को देखो जो मैंने बनाई हैं। इन खूबसूरत चीजों को देखो जो मैंने बनाई हैं। और फिर अंत में वह उनसे कहता है, अगर तुम यहूदी यह विश्वास नहीं कर सकते कि मैं वास्तव में एक भगवान हूँ, तो मुझे लगता है कि तुम पागल हो।

तो, मैं तुम्हारे साथ कुछ नहीं कर सकता। वापस घर जाओ। वैसे भी, 44 ईसा पूर्व, जूलियस सीज़र की हत्या।

खैर, जब जूलियस सीज़र रास्ते से हट जाता है, तो हमारे पास कैसियस और मार्क एंटनी, दो अन्य जनरल होते हैं जो अब मूल रूप से रोमन साम्राज्य के नियंत्रण के लिए लड़ रहे हैं। नहीं, ठीक है, यह अभी तक साम्राज्य नहीं है, रोमन गणराज्य है। वे न केवल प्रांतों के नियंत्रण के लिए बल्कि रोम के नियंत्रण के लिए भी लड़ रहे हैं।

और, आप जानते हैं, ऐसा तब होता है जब हम शायद जूलियस सीज़र की कहानी से परिचित हों, जिसे सीनेट के सभी सदस्यों ने चाकू घोंपकर मार डाला था। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि ये लोग बहुत शक्तिशाली हो रहे थे, और सीनेट ने उन्हें एक खतरे के रूप में देखा। और इसलिए

जूलियस सीज़र को वास्तव में उसकी महान लोकप्रियता के कारण रास्ते से हटाना पड़ा और क्योंकि उन्हें डर था कि वह सम्राट बनने जा रहा है, और सीनेट ऐसा नहीं चाहता था।

अब, कैसियस और मार्क एंटनी, अब वे ही हैं जो यह देखने के लिए अपने हाथ खेल रहे हैं कि उनमें से कौन रोमन गणराज्य में सबसे शक्तिशाली व्यक्ति बन सकता है। 43 ईसा पूर्व में, कैसियस को मार्क एंटनी ने हरा दिया। और उस समय, यहूदियों को इस बिंदु तक कैसियस का समर्थन करने के लिए मजबूर किया जा रहा था।

और अब वे एक बार फिर डरे हुए हैं। इसका हमारे लिए क्या मतलब होगा? क्योंकि हमने मार्क एंटनी के दुश्मन का समर्थन किया। खैर, मार्क एंटनी फिर से कहते हैं, अरे, तुम वही कर रहे हो जो तुम्हें करना चाहिए।

मैं इसके लिए आपको सज़ा नहीं दूँगा। तो, यहूदियों ने पाया कि, एक बार फिर, हालात उतने बुरे नहीं थे जितने इस समय हो सकते थे। तो, यह 43 ईसा पूर्व की बात है।

43 ईसा पूर्व यहूदिया में घटनाओं के लिए एक और महत्वपूर्ण वर्ष होने जा रहा है क्योंकि 43 ईसा पूर्व में, हेरोदेस के पिता एंटीपेटर को जहर देकर मार दिया गया था। और हेरोदेस, बेशक, यह साबित नहीं कर सका कि यह किसने किया था। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ा क्योंकि हेरोदेस को अपने संदेह थे।

और इसलिए, हेरोदेस ने हत्यारों की हत्या करवा दी। और इसके लिए उसे फिर से रोमन गवर्नर के सामने बुलाया गया। और रोमन गवर्नर ने कहा कि मैं भी यही करता।

इसलिए, उसे किसी भी तरह से दंडित नहीं किया गया। लेकिन इस घटना के कारण उसकी अपनी शक्ति बढ़ने लगी। मार्क एंटनी ने कैसियस को हराया, लगभग 42 ईसा पूर्व में सीरिया-फिलिस्तीन पर कब्ज़ा कर लिया।

और एक बार फिर, इन सभी अभियानों के कारण, अपने साम्राज्य को बनाने और कैसियस को जीतने की कोशिश में खर्च किए गए धन की वजह से, मार्क एंटनी दिवालिया हो गया है। और इसलिए, मार्क एंटनी को एक बार फिर कर बढ़ाना पड़ा। इससे यहूदी बिल्कुल भी खुश नहीं हैं।

कुछ और चल रहा है, और दूसरा कारण जिसके लिए उसे कर बढ़ाना पड़ा है वह यह है कि वह खुद को उस महिला क्लियोपेट्रा के साथ उलझा हुआ पाता है। और एक अद्भुत कहानी है जब एंटनी ने पहली बार कैसियस को हराया, तो क्लियोपेट्रा जानती है कि उसे पूर्व के नए स्वामी को जीतना है। और इसलिए, उसने धन का अविश्वसनीय रूप से भव्य प्रदर्शन करने का फैसला किया।

उसके पास सोने से मढ़ा हुआ एक जहाज था, उसके पालों में सोने के धागे लगे थे, और उसने स्वयं देवी एफ्रोडाइट जैसी पोशाक पहन रखी थी।

उसके सामने बहुत सी कम कपड़ों में सजी अप्सराएँ थीं। यह जहाज मार्क एंटनी से मिलने गया था। और जब उसने जहाज को सूरज की रोशनी में चमकते हुए किनारे पर आते देखा, तो उसके दिमाग में शायद दो विचार आए।

दोनों ही बातें वासना से जुड़ी हैं, आप जानते हैं। लेकिन एक है, यार, अरे यार, पैसे तो देखो। और दूसरा है, मुझे यह औरत चाहिए।

मार्क एंटनी एक आम आदमी की तरह था। वह निम्न वर्ग से था। वह उन उच्च-स्तरीय रोमन लोगों में से नहीं था।

उसने अपने पद के अनुसार काम किया। जूलियस सीज़र की प्रेमिका रही इस महिला को अपना प्रेमी बनाने का विचार उसके लिए कल्पना से परे था। हालाँकि, उसने पाया कि क्लियोपेट्रा ने अपना यह विशाल प्रदर्शन करने के लिए बैंकों को लगभग खाली कर दिया था।

अब, मार्क एंटनी ने खुद को क्लियोपेट्रा को उसकी आदत के अनुसार जीवन जीने में सहायता करने के लिए धन जुटाने की कोशिश करते हुए पाया। एक बार फिर, अरिस्टोबुलस द्वितीय का बेटा एंटीगोनस अभी भी यहूदिया में घूम रहा है। उसने पार्थियनों के साथ गठबंधन करने का फैसला किया।

और मूलतः, वे जो करते हैं वह यह है कि पार्थियन उसे यरूशलेम पर विजय प्राप्त करने और यरूशलेम को रोमनों से छीनने के लिए आवश्यक सेना प्रदान करने जा रहे हैं। और पार्थियन सोचते हैं कि रोम को बदनाम करने वाली कोई भी चीज़ एक अच्छी बात है। और शायद यही इसका एक हिस्सा है।

इसका दूसरा पहलू यह है कि उसने उन्हें बहुत सारा पैसा देने की पेशकश की है। और पैसा बोलता है। और इसलिए, उसके पास भाड़े के सैनिकों का एक पार्थियन समूह है, यह पार्थियन सेना है जो नीचे आती है और उसके साथ यरूशलेम जाती है।

जब एंटनी मिस्र में क्लियोपेट्रा के साथ रोते-बिलखते और भोजन करते हुए चले जाते हैं, तब पार्थियन फिलिस्तीन पर कब्ज़ा कर लेते हैं। और वे 40 ई.पू. में यहूदिया पर आक्रमण कर देते हैं। हिरकेनस को उच्च पुजारी के पद से हटा दिया जाता है।

और उन्होंने उसके कान काट दिए। उन्होंने उसके कान क्यों काटे? क्योंकि इस तरह के शारीरिक दोष वाले किसी भी व्यक्ति को उच्च पुजारी के रूप में सेवा करने की अनुमति नहीं थी। विचार यह था कि आपको किसी भी तरह के दोष से मुक्त होना चाहिए।

इसलिए, उसके कान काटकर, उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि हिरकेनस फिर कभी उच्च पुजारी नहीं बनेगा। फासेल, जो कि एंटीपेटर का दूसरा बेटा है, वह इस समय यरूशलेम का गवर्नर था। उसे पकड़ लिया गया है।

वह हेरोदेस को संदेश देने में सफल हो जाता है, जिसमें वह कहता है कि उसे इन पार्थियनों के आक्रमण के कारण भाग जाना चाहिए। फासेल खुद भी आत्महत्या कर लेता है। वह खुद को ज़मीन पर गिरा लेता है और अपना सिर चट्टान पर पटक देता है।

और इस तरह वह पार्थियनों द्वारा प्रताड़ित किये जाने से बच जाता है। हेरोद यहूदिया से बाहर निकल जाता है। और वह मिस्र जाने का फैसला करता है, जहाँ वह मार्क एंटनी से मिलने की कोशिश करेगा और कुछ कर्ज चुकाने की कोशिश करेगा और शायद यह भी देखेगा कि क्या वह कुछ पैसे जुटा सकता है ताकि वह खुद को वापस यहूदिया ले जा सके और अपने देश को वापस पा सके।

लेकिन अब एंटीगोनस यहूदिया के राजा और महायाजक के रूप में शासन कर रहा है। और उसका शासन तीन साल तक चलने वाला है, 40 से 37 ईसा पूर्व तक। अब, हम वास्तव में यह नहीं कह सकते कि हसमोनियों का शासन खत्म हो गया है, लेकिन हम देख सकते हैं कि यह अपने अंत के करीब आ रहा है, है न? एंटीगोनस एरिस्टोबुलस का बेटा है।

एरिस्टोबुलस उसी वंश का है। एंटीगोनस, कुछ लोगों ने कहा है कि वह हसमोनियन शासकों में से अंतिम है। यह बिल्कुल सटीक नहीं है।

क्योंकि हेरोदेस के पोते में से एक शासक बनने जा रहा है। और हेरोदेस खुद हसमोनियन नहीं है, लेकिन उसकी पत्नी थी। इसलिए, हसमोनियन वंश के माध्यम से, थोड़ी देर बाद, हेरोदेस के वंशजों में से एक फिर से इस क्षेत्र का राजा बनने जा रहा है।

और फिर उसके बाद भी, उसके बेटे को भी एक महत्वपूर्ण क्षेत्र दिया जाएगा जिस पर वह शासन करेगा। तो, यह हसमोनियों की कहानी का अंत नहीं है, लेकिन हम करीब पहुंच रहे हैं। आइए उन हसमोनियों के बारे में बात करते हैं।

क्या वे वास्तव में नायक थे या वे नायक नहीं थे? और यह एक ऐसी बात है जिस पर वास्तव में बहुत लंबे समय से बहस चल रही है। क्योंकि यहूदी, कई युगों से, इन लोगों को पसंद नहीं करते थे और उन्हें बदनाम करते थे। हालाँकि, हमारे पास हनुक्का और उस तरह की अन्य चीजें हैं।

हसमोनियों के बाद के शासकों को आम तौर पर यहूदियों द्वारा खराब माना जाता था। आज भी, राय व्यापक रूप से भिन्न हैं। कुछ विद्वानों का दावा है कि उन्होंने यहूदी धर्म को बचाया।

मुझे याद है कि मैंने कुछ समय पहले एक इतिहास में यह उद्धरण पढ़ा था। इसमें कहा गया था कि हसमोनियन लोगों ने सचमुच यहूदी धर्म को विलुप्त होने से बचाया था। उन्होंने इसे इस तरह लिखा था।

और मैंने ये शब्द देखे और मेरा जबड़ा खुला रह गया। मैं सोच रहा था, एक मिनट रुको। क्या यरूशलेम में सिर्फ यहूदी थे? माफ़ करना? नहीं, यहूदी तो हर जगह थे।

पार्थिया में यहूदी थे। मिस्र में यहूदी थे। ग्रीस में भी यहूदी थे।

आप यहूदी धर्म को नहीं बचा रहे थे। आप यहूदी धर्म के एक खास ब्रांड को बचा रहे थे जो यरूशलेम में मौजूद था। और कम से कम, हम उन्हें इसका कुछ श्रेय तो दे ही सकते हैं।

हाँ, उन्होंने यरूशलेम में यहूदियों को सताया जाने और उन्हें अपना धर्म त्यागने के लिए मजबूर किए जाने से बचाया। और यह तथ्य कि यरूशलेम को यहूदी धर्म के लिए इतना केंद्रीय शहर और इतना महत्वपूर्ण स्थान माना जाता था, यह बहुत कुछ कहता है। क्या कोई और ऐसा कर सकता था? शायद।

लेकिन सच तो यह है कि ऐसा किसी और ने नहीं किया। यह हसमोनियन लोगों ने किया। उन्होंने अपनी परंपराओं को बचाने के लिए लड़ाई लड़ी।

लेकिन दूसरी ओर, उन्होंने इस पूरी प्रक्रिया में कुछ बहुत ही प्रिय परंपराओं का भी त्याग किया। उदाहरण के लिए, सब्बाथ दिवस की पवित्रता। विद्रोह की शुरुआत में ही, उन्होंने तय कर लिया था कि, सब्बाथ दिवस, सब्बाथ मैबेथ .

अगर आप हम पर हमला करेंगे, तो हम लड़ेंगे। तुम्हें पता है? सादोक के पुजारियों का उत्तराधिकार। अनगिनत युगों से, यरूशलेम में हर महायाजक सादोक का वंशज रहा है।

और अब वे उस परंपरा को त्यागकर खुद को उच्च पुजारी के रूप में स्थापित कर रहे हैं और एक ऐसी परंपरा को नकार रहे हैं जिसकी जड़ें वास्तव में बाइबल में ही हैं। और जहाँ परमेश्वर ने घोषणा की थी कि उसने सादोक के वंश और परिवार के साथ शांति की वाचा बाँधी है। इससे भी अधिक गंभीर बात यह है कि उन्होंने राजत्व की दाऊदी वंश की परंपरा को त्याग दिया।

बाइबल कहती है कि परमेश्वर ने दाऊद से वादा किया था कि उसके पास राजाओं की एक शाश्वत वंशावली होगी और वह वंशावली कभी खत्म नहीं होगी। और फिर भी अरिस्टोबुलस के समय में हसमोनियों ने खुद को राजा की उपाधि देकर उस परंपरा को त्याग दिया था। इन हसमोनियों के बारे में दिलचस्प बातें जो यूनानी संस्कृति के इतने विरोधी थे।

उनमें से हर एक ने यूनानी नाम अपनाए। उन्होंने सत्ता के लिए कई यूनानी तौर-तरीके अपनाए। उन्होंने अपने दुश्मनों के साथ वैसा ही व्यवहार किया जैसा यूनानी लोग अपने दुश्मनों के साथ करते थे।

और जब मैं हसमोनियन और खास तौर पर उनके बाद के वर्षों की कहानी पढ़ता हूँ, तो मुझे एक मशहूर किताब की पंक्तियाँ याद आती हैं। किताब का नाम है एनिमल फ़ार्म। अगर आपने कभी वह किताब पढ़ी है, तो आपको कहानी पता होगी कि जानवर फ़ार्म पर कब्ज़ा कर लेते हैं और वे इन उच्च सिद्धांतों के साथ शुरुआत करते हैं कि सभी जानवर समान हैं।

कुछ समय बाद, जब सूअर अपनी शक्ति और प्रभुत्व का दावा करना शुरू करते हैं, तो वे इस बिंदु पर पहुँच जाते हैं जहाँ वे कहते हैं, ठीक है, सभी जानवर समान बनाए गए हैं, लेकिन कुछ जानवर दूसरों की तुलना में अधिक समान हैं। पुस्तक के अंत में, सूअर खेत से अन्य जानवरों को

मनुष्यों को बेच देते हैं। सूअर मनुष्यों के साथ बैठते हैं, भोजन करते हैं, और उनके साथ शराब पीते हैं।

और यह कहता है कि खेत में बचे हुए जानवर खिड़कियों से झाँकते थे। और यह कहता है कि बाहर के जीव सूअर से आदमी की ओर, आदमी से सूअर की ओर और फिर सूअर से आदमी की ओर देखते थे। लेकिन पहले से ही यह कहना असंभव था कि कौन कौन है।

मुझे लगता है कि हसमोनियों के साथ भी यही होता है। और क्या यह विडंबना नहीं है कि सुअर ही वह जानवर है जो हमें हसमोनियों के परिवर्तन के लिए एक सादृश्य प्रदान कर सकता है क्योंकि वे हेलेनिज़्म की दुनिया और सेल्यूसिड साम्राज्य की राजनीतिक साज़िशों में बहुत अधिक सहज हो जाते हैं। यह डॉ. एंथनी टॉमसिनो हैं जो यीशु से पहले यहूदी धर्म पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह

सत्र 12 है , रोम का आगमन।